Seventeenth Loksabha

>

Title: Regarding proper management of Plastic Waste.

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): माननीय अध्यक्ष महोदय, पर्यावरण से लेकर मानव जीवन पर प्लास्टिक का बुरा प्रभाव सामने आ रहा है, फिर भी प्लास्टिक का उपयोग एवं उत्पादन दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । आज दैनिक जीवन के लगभग हर क्षेत्र में हम प्लास्टिक को मौजूद पाते हैं । पहले से भी यह अनुमान लगाया गया था कि प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग वर्ष 2020 तक 13.4 मीट्रिक टन से बढ़कर 22 मीट्रिक टन होने की संभावना है ।

कोरोना रूपी वैश्विक महामारी के इस दौर में प्लास्टिक इस्तेमाल करने पर हमारी निर्भरता और ज्यादा बढ़ गई है । कोरोना वायरस से बचाव के लिए बनने वाले मास्क, गलव्स, पीपीई किट्स, सैनिटाइजर की बोतल आदि में प्लास्टिक का उपयोग होता है । इनके इस्तेमाल में बेतहाशा वृद्धि हुई है । डब्ल्यूएचओ का अनुमान है कि हर महीने दुनिया में 89 मिलियन प्लास्टिक मेडिकल मास्क, 76 मिलियन प्लास्टिक एग्जामिनेशन मास्क, 1.6 मिलियन प्लास्टिक प्रोटेक्टिव चश्मे की आवश्यकता होती है । परन्तु, इन वस्तुओं के इस्तेमाल के बाद कचरे के रूप में इनका प्रबंध कैसे किया जाए, इसका उपाय नहीं हुआ है । जब विश्व की आबादी प्रतिदिन सिर्फ एक मास्क या गलव्स का उपयोग करती है, तो महामारी खत्म होने के बाद दुनिया में 129 बिलियन फेस मास्क और 65 बिलियन दस्ताने की बर्बादी हो सकती है । मास्क और गलव्स, पीपीई, किट्स का उपयोग करने के बाद सीधे कचरे में डाल देने से जहाँ एक तरफ वायरस के विस्तार का खतरा हो सकता है, वहीं दूसरी तरफ प्लास्टिक से निर्मित इन वस्तुओं के रीसाइक्लिंग की उचित व्यवस्था न होने से यह पर्यावरण के लिए घातक साबित हो रहा है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि प्लास्टिक किसी अन्य तत्व या जैविक चीजों की तरह पर्यावरण में नहीं घुलता है, बल्कि इसे अपघटित होने में सैंकड़ों साल लग जाते हैं ।

अत: सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि उपरोक्त तथ्यों पर विचार करते हुए आवश्यक उपाय किए जाएं, जिससे वायरस की रोकथाम के बाद पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सके ।

माननीय अध्यक्ष: कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्रीमती रमा देवी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।